कपास नई खोज़

भा.कृ.अनु.प. – केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र

देखें : www.cicr.org.in

अंक: 4 खंड: 5 मई 25 – 31, 2015

वैज्ञानिक वार्ताएँ

प्राकृतिक आपदा और उनकी तैयारी

केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबत्तूर, के साप्ताहिक वैज्ञानिक भाषण की एक भाग के रूप में, डॉ. दु. कॉजना, वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान) ने दि. 23 मई, 2015 को प्राकृतिक आपदा और उनकी तैयारी पर एक भाषण दिया । उनकी प्रस्तुति में उन्होंने दुनिया में सर्वोच्च घातक आपदाओं, यह कैसे होता है, इसका मापने कैसे करना, किस तरह की प्रभाव हैं, भारत में आपदा की स्थिति, और कैसे इससे कम करना आदि पर प्रकाश डाला । आपदा मानव समाज के लिए एक बहुत ही आम घटना है ।

आपदा का मतलब उस विशेष घटना के खतरों और भेद्यता का गुणन है चाहे यह एक मानव द्वारा निर्मित हो सकता है या प्राकृतिक हो सकता है । अति प्राचीन काल से, प्राकृतिक आपदा लोगों द्वारा अनुभव किया गया है, लेकिन उनकी तीव्रता और बारंबार होना हाल के वर्षों में ही अधिक से अधिक बढ़ा दी गई है । प्राकृतिक आपदा भूवैज्ञानिक के आधारित (भूकंप, ज्वालामुखी, विस्फोट, सुनामी, भूम बिछल, हिमस्खलन), मौसम और जलवायु आधारित (चक्रवात, तूफान, बाढ़, सूखा, गर्मी की लहरें, बवंडर), अंतरिक्ष से रोगों और जैविक खतरों और आपदा में वर्गीकृत हैं । सभी आपदाओं में बाढ़ सबसे आम हैं जिसके बाद सूखा हवा, तूफान, और भूकंप हैं । अधिक जनसंख्या और शहरीकरण की वजह से, आपदा अक्सर होता है और उनके प्रभावों जैसे मौत, विकलांगता, रोग, मानसिक समस्याओं, भोजन की कमी, सामाजिक, आर्थिक नुकसान और पारिस्थितिक विघटन बहुत गंभीर हैं । भारत, इसकी भौगोलिक स्थानों और भूवैज्ञानिक संरचनाओं, के कारण दुनिया में सबसे आपदा का खतरा देशों में से एक है । लगभग 65, 70, 5 और 8 प्रतिशत के भूमि क्षेत्र, क्रमशः भूकंप सूखा, बाढ़ और चक्रवात के भेद्य हैं । क्षेत्र वार विश्लेषण से, यह स्पष्ट है कि भारत की उत्तरी क्षेत्र द्वारा हिमस्खलन, भूम बिछल, बाढ़, सूखा और भूकंप की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि इस क्षेत्र भूकंपीय जोन तृतीय से पाँच के अधीन होता है । पूर्वी क्षेत्र, बारहमासी नदियों जैसे ब्रह्मपुत्र, गंगा, के भारी बाढ़ के साथ सामना कर रहे हैं । सूखा, गर्मी की लहर, मूसलधार बारिश, चक्रवात, भारी हवा और भूकंप भी इस क्षेत्र में आम हैं । देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र प्राकृतिक आपदा बाढ़, भूस्खलन, पवन आक्रोश, भूकंप का सामना कर रहे हैं, क्योंकि इसके अधिकांश भाग भूकंपीय जोन चतुर्थ और पॉचवा के तहत आता है । पश्चिमी क्षेत्र व्यापक रूप से गंभीर सूखे, जमीन और मिट्टी की हवा कटाव, बाढ़ और चक्रवात के लिए ज्ञात है । इस क्षेत्र भी भूकंप के लिए उन्मुख है । दक्षिणी क्षेत्र, विशेष रूप से तटीय क्षेत्र, चक्रवात, समुद्र कटाव, सुनामी, भूस्खलन से भेद्य है । अंडमान एवं निकोबार और लक्षद्वीप के द्वीपों समुद्र का कटाव और सुनामी की समस्याओं के साथ सामना कर रहे हैं । प्राकृतिक आपदा प्राकृतिक घटनाएं और हमारे जीवन का एक हिस्सा होने के कारण, नियंत्रित नहीं किया जा सकता है, लेकिन यह कुछ तैयारियों और हलका करने की रणनीतियों को अपनाने से प्रबंधित किया जा सकता है ।

देसी कपास फुले धन्वंत्री की खेती पर किसान प्रशिक्षण

भा.कृ.अ.प – के.क.अ.सं, नागपुर ने युवा ग्रामीण संघ, नागपुर के समन्वय में, दि. 24.5.2015 को उच्च घनत्व रोपण प्रणाली के तहत देसी कपास किस्म फुले धन्वंत्री की खेती पर एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया । नागपुर, वर्धा, अमरावती, बुलढाणा, वाशिम एवं महाराष्ट्र के अकोला और जालना जिलों से लगभग 40 किसानों ने इस लंबे कार्यक्रम में भाग लिया । श्री. दत्ता पाटिल, संस्थापक, युवा ग्रामीण एसोसिएशन ने किसानों और अधिकारियों का स्वागत किया और कहा कि प्रशिक्षण के उद्देश्य देसी कपास की खेती के प्रथाओं के पैकेज को समझना एवं देसी कपास की खेती में करना और न करने के संबंध में सुदृढ़ करना है । जो नहीं करना है उनका विवरण दिया । डॉ. के.आर.क्रांति ने हाल ही में युवा ग्रामीण विकास एसोसिएशन के प्रयासों से हाल में हुई अनुसंधान एवं विकास और हाल में उनके पहल से हुआ विदर्भ देसी कपास उत्पादकों एसोसिएशन का गठन की सराहना की । डा. विनीता घोटमारे, प्रमुख वैज्ञानिक, के.क.अ.सं., ने फुले धन्वंत्री की लाभदायक खेती के लिए सम्पूर्ण उत्पादन और संरक्षण तकनीक को समझाकर एक विस्तृत प्रस्तुति पेश की और एक स्लाइड शो के साथ प्रस्तुति समाप्त हो गया । डॉ. संध्या क्रांति, प्रमुख, फसल संरक्षण, डॉ.डी.ब्लैस, प्रमुख, फसल उत्पादन, डॉ.सुमन बॉला सिंह, प्रमुख, फसल सुधार एवं डॉ. एम.वी.वेणुगेपालन ने खरपतवार नियंत्रण, कीट प्रबंधन, बीज उत्पादन, अर्थशास्त्र और विपणन के बारे में किसानों द्वारा लिए गए विभिन्न प्रश्नों का उत्तर दिया । बाद में डॉ. लक्ष्मीकान्त पाडोल, निदेशक, नीम फाउंडेशन, नागपुर ने नीम बीज दाना निकालने की तैयारी और कपास और अन्य फसलों में कीट प्रबंधन हेतु इसके उपयोग पर एक प्रस्तुति प्रस्तुत किया । शल्य कपास उद्योग के प्रतिनिधियों ने भी इस प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया । भाग लिए गए किसान हेतु एक एकड़ में रोपण के लिए 5 किलोग्राम के फुले धन्वंत्री बीज प्रदान की गयी।

किसानों के लिए कार्यशाला

उप – विभागीय कृषि अधिकारी (एस.डी.ए.ओ.) कटोल ने श्री अरविंदबाबु देशमुख सभागृहा (कटोल, जिला नागपुर) में दि. 29 मई, 2015 को किसानों के लिए कार्यशाला और किसान गोष्टी का आयोजन किया जहां कटोल तालुका के विभिन्न गांवों से 600 से अधिक किसानों ने कार्यक्रम में भाग लिया । डॉ. विनीता घोटमारे, प्रमुख वैज्ञानिक द्वारा उच्च घनत्व रोपण प्रणाली पर एक विस्तृत पावर प्वाइंट प्रस्तुति दी गयी । उन्होंने उत्पादन लागत कम करने हेतु सूरज और फुले धन्वंत्री जैसे किस्मों पर प्रकाश डाला । इस कार्यक्रम में डॉ. आशिश देशमुख, विधायक, कटोल, विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र, श्री. विजय गॉव्टे, संयुक्त कृषि निदेशक, नागपुर एवं अन्य अदिकारियॉ ने सक्रिय रुप से भाग लिया । के.क.अ.सं., के अधिकारियों डॉ. संध्या क्रांति, प्रधान, फसल संरक्षण विभाग, डॉ. शैलेश गावंडे, वैज्ञानिक (रोगविज्ञान) एवं श्री. हरीश कुंबल्कर ने चर्चा में भाग लिया और किसान के प्रश्नों को स्पष्ट किया ।

भाग लिए गये बैठकों

- डॉ. विश्लेश नगरारे ने दि. 25-26 मई, 2015 के दौरान पुणे में कृषि आयुक्त की अध्यक्षता में हुई क्रापसेप की विषय - निर्वाचन समिति की बैठक में भाग लिया ।
- डॉ. विश्लेश नगरारे और डॉ. जी.बालसुब्रमणी दि. 27-28 मई, 2015 के दौरान नई दिल्ली में हुआ संस्थागत जैव सुरक्षा अधिकारियों के प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया ।
- डॉ. डी.मोंगा ने दि. 26 मई, 2015 को उद्योग भवन, नई दिल्ली में 14 वीं कपास तकनीकी सहायता कार्यक्रम (टाप) की विषय-निर्वाचन समिति की बैठक में भाग लिया ।

विदाई की बैठक

श्री. एम.टी. नफाडे, तकनीकी अधिकारी (टी 7-8), फसल उत्पादन विभाग को दि. 30 मई, 2015 के अवसर पर कर्मचारी कल्याण क्लब की ओर से विदाई दी गई । डॉ. के.आर क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं., ने श्री. नफाडे को इस अवसर पर सम्मानित किया । सभी वैज्ञानिकों, प्रशासनिक, तकनीकी सहायक और अन्य कर्मचारियों इसमें उपस्थित थे ।

निर्मित एवं प्रकाशित:	डॉ. के.आर.क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं, नागपुर
प्रमुख संपादक:	डॉ. एस. एम. वास्निक
संपादकों:	डॉ. जे.एन्नि शीबा, डॉ. विश्लेष नगरारे, डॉ. जे.अमुदा एवं डॉ. एम. शरवणन
जनसंचार माध्यम समर्थन एवं रुपांकन:	डॉ. एम. सबेष एवं श्री. एस. सत्यकुमार
हिन्दी अनुवाद:	श्रीमति. के. सुभश्री एवं डॉ. अ.हि.प्रकाश

प्रमाण: कपास नई खोज, अंक – **4**, खंड – **5, 2015**, भा.कृ.अनु.प. – केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

प्रकाशन टिप्पणी: यह समाचार पत्र आनलाईन http://www.cicr.org.in/News Letter.html में उपलब्ध है ।
कपास नई खोज एक खुला उपयोग कपास समाचार पत्र है ।

कपास नई खोज - के.क.अ.सं, समाचार पत्र केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र.
कार्यालय: पांजरी, एल.पी.जी. बॉटलिंग प्लॉन्ट के पास, वर्धा रोड, नागपुर- 441 108.
दूरभाष: 07103-275536 फैक्स: 07103-275529; E-mail: cicrnagpur@gmail.com